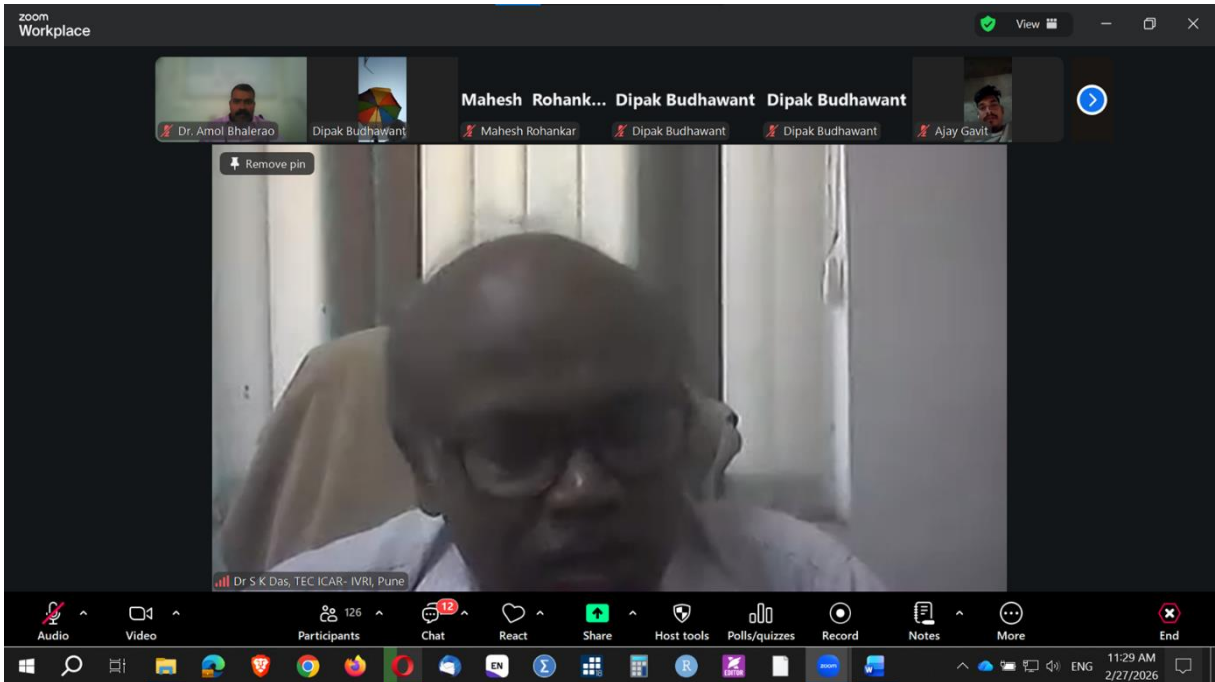


प्रशिक्षण एवं शिक्षा केंद्र (TEC), आई.व्ही.आर.आई. - पुणे द्वारा राज्यस्तरीय ऑनलाइन उद्यमिता विकास कार्यशाला का सफल आयोजन।

प्रशिक्षण एवं शिक्षा केंद्र (TEC), आईसीएआर-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पुणे द्वारा दिनांक 27 फरवरी 2026 को "राज्यस्तरीय ऑनलाइन उद्यमिता विकास कार्यशाला" का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य कृषि एवं पशुपालन क्षेत्र में स्वरोजगार, स्टार्टअप संस्कृति तथा वैज्ञानिक उद्यमिता को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम में कुल 458 प्रतिभागियों ने पंजीकरण कराया, जिनमें से 152 प्रतिभागियों ने पूरे समय सक्रिय रूप से सहभागिता करते हुए विशेषज्ञों से संवाद स्थापित किया। यह कार्यशाला महाराष्ट्र के युवाओं, किसानों, महिला उद्यमियों तथा उभरते कृषिआधारित स्टार्टअप्स के लिए एक सशक्त मंच सिद्ध हुई।



(डॉ. एस. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा अध्यक्षीय उद्बोधन)

कार्यक्रम का शुभारंभ आई.व्ही.आर.आई. इनवोकेशन गीत के साथ हुआ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. समीर कुमार दास, प्रधान वैज्ञानिक ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने संतुलित आहार, पोषण प्रबंधन, रोग नियंत्रण एवं समयबद्ध टीकाकरण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पशुधन आधारित व्यवसाय में लाभ बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक पोषण प्रबंधन, स्वास्थ्य सुरक्षा, उत्पादकता वृद्धि तथा मृत्यु दर में कमी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने

यह भी रेखांकित किया कि योजनाबद्ध प्रबंधन, लागत नियंत्रण तथा तकनीकी परामर्श से किसान अपने लाभांश में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं।

कार्यशाला के समन्वयक डॉ. अमोल भालेराव, वैज्ञानिक, TEC-ICAR IVRI पुणे ने कार्यशाला के उद्देश्य, संरचना एवं अपेक्षित परिणामों पर विस्तृत प्रस्तुति दी। उन्होंने प्रतिभागियों को कृषि एवं पशुपालन आधारित स्टार्टअप को “रोजगार मांगने” के बजाय “रोजगार देने” का माध्यम बनाने का आह्वान किया। उन्होंने भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, अनुसंधान आधारित तकनीकों तथा नेटवर्किंग की भूमिका पर विशेष बल दिया। डॉ. भालेराव ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों से संपर्क और मार्गदर्शन प्राप्त कर किसान एवं युवा उद्यमी अपने व्यवसाय को प्रतिस्पर्धात्मक एवं टिकाऊ बना सकते हैं।

The screenshot shows a Zoom meeting interface. The main content is a presentation slide titled "Egg and Meat Production Scenario". The slide includes the following information:

- Poultry Production in India (BAHS, 2025)**
- Total Egg Production:** 149.11 billion (2nd Rank)
- Per Capita Availability:** 106 eggs/year
- Total Meat Production:** 10.50 million tonnes
- Per Capita Availability:** 7.5 kg/annum

The slide also features a line graph showing "All India Egg Production & Per Capita Availability" from 2019-20 to 2024-25, and a pie chart titled "Graph 3.06: Species-Wise Meat Contribution in 2024-25".

On the right side of the screen, there is a video feed of Dr. Jaydip, ICAR-CARI, who is speaking. The Zoom meeting controls are visible at the bottom, including Audio, Video, Participants (139), Chat, React, Share, Host tools, Polls/quizzes, Pause/stop recording, Notes, More, and End. The system tray at the bottom shows the time as 11:52 AM on 2/27/2026.

(डॉ. जयदीप रोकडे द्वारा कार्यशाला में जानकारी युक्त उद्बोधन)

तकनीकी सत्रों की शुरुआत डॉ. जयदीप जयवंत रोकडे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सेंट्रल एवीयन रिसर्च इंस्टिट्यूट, बरेली द्वारा की गई। उन्होंने कुक्कुटपालन आधारित उद्यमिता के वैज्ञानिक पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने उत्पादन लागत कम करने की रणनीतियाँ, उन्नत नस्ल चयन, वैज्ञानिक ब्रूडिंग एवं प्रबंधन तकनीक, फीड कन्वर्जन रेशियो में सुधार तथा जैव-सुरक्षा उपायों पर विस्तार से चर्चा की। साथ ही उन्होंने मूल्यवर्धन, अंडा एवं मांस विपणन मॉडल, अनुबंध आधारित उत्पादन प्रणाली तथा लघु उद्यम को मध्यम स्तर के व्यावसायिक मॉडल में रूपांतरित करने की प्रक्रिया पर मार्गदर्शन दिया। उनका पूरा व्याख्यान किसानों की आय वृद्धि और जोखिम प्रबंधन पर केंद्रित रहा। उन्होंने पारंपरिक कुक्कुटपालन के साथ-साथ गैर-पारंपरिक पोल्ट्री फार्मिंग, विशेषकर बटेर (क्वेल) पालन की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र में अंडा उत्पादन की मांग और आपूर्ति के बीच बड़ा अंतर है, जिसे स्थानीय स्तर

पर उद्यमिता के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। उन्होंने किसानों को छोटे स्तर से शुरुआत कर वैज्ञानिक तरीके अपनाने की सलाह दी।

उन्होंने जैव-सुरक्षा उपाय, फीड प्रबंधन, नस्ल चयन, लागत नियंत्रण, उत्पादन बढ़ाने की रणनीतियाँ तथा मूल्यवर्धन पर विस्तार से जानकारी दी। साथ ही उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे मिलकर किसान उत्पादक संगठन (FPO) या किसान उत्पादक कंपनी का गठन करें ताकि सामूहिक खरीद, सामूहिक विपणन और बेहतर लाभ प्राप्त किया जा सके। उन्होंने प्रतिभागियों के सभी प्रश्नों का व्यवस्थित और व्यावहारिक उत्तर दिया तथा पोल्ट्री उद्यम को आय का स्थायी स्रोत बनाने की दिशा दिखाई।

दूसरे तकनीकी सत्र में डॉ. तेजस शेंडे, सहयोगी प्राध्यापक, KNP कॉलेज ऑफ़ वेटेरनरी साइंस, महाराष्ट्र एनिमल एंड फिशरीज साइंसेज विश्वविद्यालय, शिरवल ने पशुधन आधारित उद्योगों के वैज्ञानिक प्रबंधन पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने डेयरी एवं बकरी पालन में नस्ल सुधार, आवास प्रबंधन, संतुलित आहार, प्रजनन प्रबंधन एवं रोग नियंत्रण की उन्नत तकनीकों की जानकारी दी। उन्होंने स्टार्टअप योजना तैयार करने, लागत-लाभ विश्लेषण करने, जोखिम पहचान एवं बीमा योजनाओं के उपयोग पर भी मार्गदर्शन दिया।

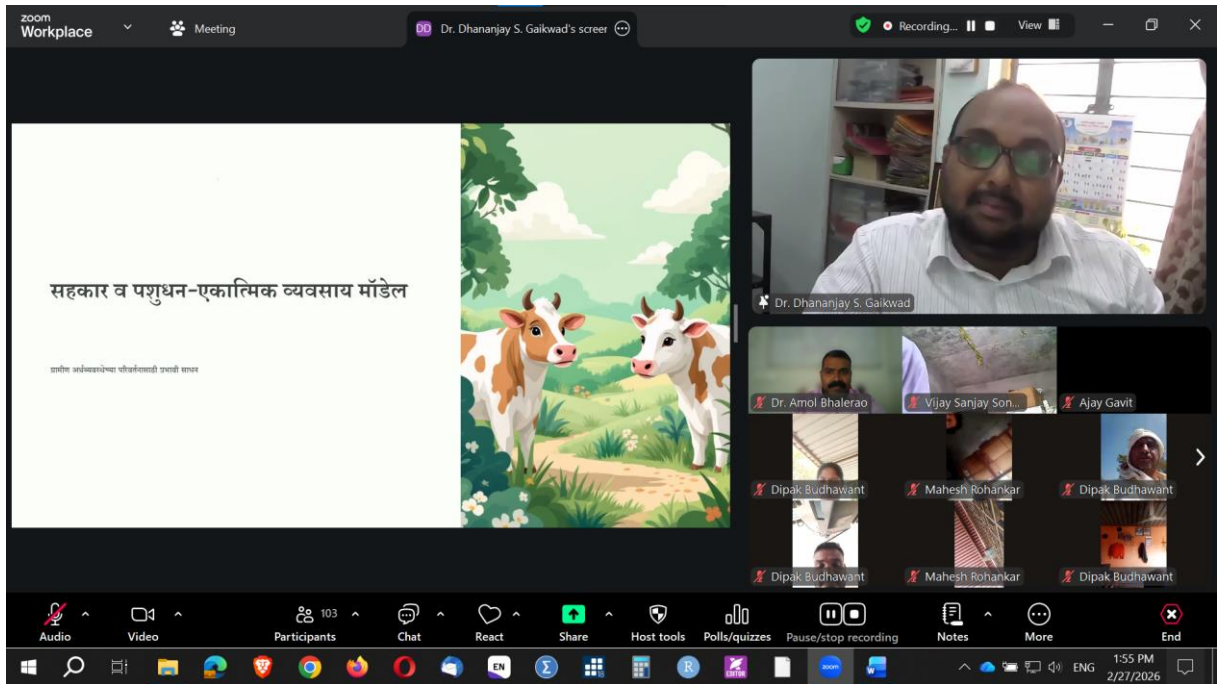
The screenshot displays a Zoom meeting in progress. The main window shows a presentation slide with the title "शास्त्रोक्त शेळीपालन तोंड:ओळख" (Scientific Goat Rearing: Identification). Below the title are three circular images of goats. The text on the slide identifies the speaker as "डॉ. तेजस चंद्रकांत शेंडे" (Dr. Tejas Chandrakant Shinde), an Assistant Professor at KNP College of Veterinary Science, Shirwal. The Zoom interface includes a toolbar at the bottom with icons for audio, video, participants (131), chat, react, share, host tools, polls/quizzes, pause/stop recording, notes, and more. On the right side, a list of participants is visible, including Dipak Budhawant, Dr. Amol Bhalerao, Dattatrya Pawar, Ajitkumar Sudke, and Bhiyasaheb Waghmare.

(कार्यशाला में जानकारी साझा करते हुए डॉ. तेजस शेंडे, सहयोगी प्राध्यापक)

डॉ. तेजस शेंडे ने स्पष्ट किया कि यदि पशुपालन को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अपनाया जाए तो यह अत्यधिक लाभकारी व्यवसाय सिद्ध हो सकता है। उन्होंने किसानों से कहा कि वे शुरुआत छोटे यूनिट से करें, अनुभव प्राप्त करें और धीरे-धीरे बड़े फार्म की ओर बढ़ें। उन्होंने विभिन्न नस्लों का चयन, बकरी परिवहन के वैज्ञानिक तरीके, संतुलित आहार, हरा चारा प्रबंधन, रोग

पहचान एवं उपचार, टीकाकरण अनुसूची, करड़ों (बच्चों) का पालन-पोषण तथा वैज्ञानिक आवास व्यवस्था पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि बकरी पालन केवल पारंपरिक गतिविधि नहीं, बल्कि एक संगठित और उच्च लाभ वाला व्यवसाय बन सकता है यदि इसे व्यवस्थित ढंग से अपनाया जाए। उन्होंने लागत-लाभ विश्लेषण, बाजार मांग और उचित प्रबंधन के माध्यम से लाभ बढ़ाने के उपाय बताए।

तृतीय सत्र में डॉ. धनंजय गायकवाड़, सहायक प्राध्यापक, VAMNICOM, पुणे ने कृषि व्यवसाय संरचना एवं वित्तीय नियोजन पर केंद्रित मार्गदर्शन दिया। उन्होंने सहकारी मॉडल, समूह आधारित उद्यम, क्लस्टर विकास, पूंजी निवेश योजना, बैंक ऋण तैयारी, परियोजना रिपोर्ट लेखन एवं नकदी प्रवाह प्रबंधन के विषयों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने उद्यम नेतृत्व, निर्णय क्षमता, समय प्रबंधन एवं व्यावसायिक अनुशासन को सफल स्टार्टअप की प्रमुख शर्त बताया। उन्होंने डेयरी सहकारी समितियों के सफल उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि सामूहिक प्रयास से किसान अपनी सौदेबाजी क्षमता बढ़ा सकते हैं। उन्होंने किसानों को सहकारी दुग्ध व्यवसाय, समूह आधारित प्रसंस्करण इकाइयों तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।



(कार्यशाला में जानकारी साझा करते हुए डॉ. धनंजय गाइकवाड़, सहायक प्राध्यापक)

डॉ. धनंजय गाइकवाड़ ने स्पष्ट किया कि प्रसंस्करण आधारित व्यवसाय किसानों को अधिक लाभ प्रदान करते हैं और बिचौलियों की भूमिका कम करते हैं। उन्होंने परियोजना रिपोर्ट तैयार करने, बैंक ऋण प्रक्रिया, पूंजी प्रबंधन, मूल्य श्रृंखला विकास, ब्रांडिंग तथा बाजार से सीधा जुड़ाव स्थापित करने पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया। उनका सत्र किसानों को संगठित उद्यमिता की ओर प्रेरित करने वाला रहा।

The screenshot shows a Zoom meeting in progress. The main window displays a presentation slide with the following content:

गोड्या पाण्यातील व सागरी माशांचे उत्पादन (2021-22)

41.27 सागरी उत्पादन

121.21 गोड्या पाण्यातील उत्पादन

The slide includes an illustration of a fisherman using a cast net in a pond. Below the slide, there is a row of fish icons. The Zoom interface at the bottom shows 82 participants, a chat window, and various meeting controls. The system tray at the bottom right indicates the time as 3:09 PM on 2/21/2026.

(कार्यशाला में डॉ. माधुरी पाठक द्वारा मछली पालन पर प्रेरणात्मक उद्बोधन)

अंतिम तकनीकी सत्र में डॉ. माधुरी पाठक, वैज्ञानिक (मत्स्यपालन), ICAR-सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ फिशरीज एजुकेशन, मुंबई ने मत्स्यपालन एवं एकीकृत कृषि प्रणाली में उपलब्ध व्यावसायिक अवसरों पर प्रकाश डाला। उन्होंने एकीकृत मत्स्यपालन मॉडल, तालाब प्रबंधन, फीडिंग तकनीक, उच्च उत्पादकता नस्ल चयन, जल गुणवत्ता प्रबंधन एवं मूल्यवर्धन आधारित प्रसंस्करण इकाइयों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि मत्स्यपालन को बकरी, पोल्ट्री या सब्जी उत्पादन के साथ जोड़कर एकीकृत मॉडल अपनाने से आय में कई गुना वृद्धि संभव है। उन्होंने बताया कि बायोफ्लॉक तकनीक कम पानी और सीमित स्थान में अधिक उत्पादन की सुविधा देती है, जिससे छोटे किसान भी उच्च आय अर्जित कर सकते हैं।

पूरे कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए विशेषज्ञों से प्रश्न पूछे और व्यावहारिक समाधान प्राप्त किए। सभी वक्ताओं ने अपने सत्रों में स्पष्ट रूप से इस बात पर जोर दिया कि वैज्ञानिक तकनीक, व्यवसायिक दृष्टिकोण, नेटवर्किंग तथा बाजार उन्मुख सोच अपनाकर ही किसान एवं युवा उद्यमी अपनी आय में स्थायी वृद्धि कर सकते हैं। यह कार्यशाला केवल एक प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं रही, बल्कि कृषि एवं पशुपालन क्षेत्र में आत्मनिर्भर और लाभकारी उद्यमिता की दिशा में एक सुदृढ़ पहल सिद्ध हुई। आयोजकों ने भविष्य में भी इस प्रकार के व्यापक और प्रभावी क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

पूरे कार्यक्रम का आयोजन एवं प्रभावी मंच संचालन डॉ. अमोल भालेराव, वैज्ञानिक, प्रशिक्षण एवं शिक्षा केंद्र, आईसीएआर-आईवीआरआई, पुणे द्वारा अत्यंत कुशलतापूर्वक किया गया। उन्होंने सभी सत्रों के बीच सुचारु समन्वय स्थापित किया, वक्ताओं का परिचय कराया, समय प्रबंधन

सुनिश्चित किया तथा प्रतिभागियों और विशेषज्ञों के बीच संवाद को सक्रिय बनाए रखा। उनके सुव्यवस्थित संचालन एवं समर्पित प्रयासों के कारण कार्यशाला निर्धारित समयानुसार सफलतापूर्वक संपन्न हुई और प्रतिभागियों को एक व्यवस्थित, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी अनुभव प्राप्त हुआ।



हर कदम, हर डगर

किसानों का हमसफर

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

AgriSearch with a human touch